ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करतीं दीदियां

सखी मंडल की दीदियां महिला समूह से जुड़कर सशक्त हो रही हैं. महिलाओं की एकजुटता अब रंग लाने लगी है. सभी मिलकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान कर रही हैं. महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है. रोजगार करने के लिए बैंक और समूह से कम ब्याज दर पर लोन दिया जा रहा है. बैंक सखी के जरिये महिलाओं के लिए बैंक की राह आसान हो गयी है. इससे महिलाएं काफी उत्साहित हैं. गौ-पालन, बकरी पालन और बतख पालन के जरिये इन महिलाओं की आमदनी बढ़ रही है. इतना ही नहीं, ग्रामीण महिलाओं ने अपने लिए साप्ताहिक बाजार भी शुरू किया है. इससे गांव में पैसे का प्रवाह बढ़ रहा है. ग्रामीणों को भी स्वरोजगार के अवसर मिल रहे हैं.

बतख पालन से बढ़ेगी महिलाओं की आय

बतख के चूजे के साथ महिला समूह की दीदियां.

रूबी खातून

प्रखंड : अनगड़ा
जिला : रांची

रांची जिला अंतर्गत अनगड़ा प्रखंड के गेतलसूद कलस्टर के एकता आजीविका रिसोर्स सेंटर (जीआरसी) में बतख वितरण किया गया. 170 रुपये में 15 बतख के चूजे महिलाओं को दिये गये. इसे लेकर महिलाएं काफी खुश दिखीं. चांदनी महिला समिति और महेशपुर आजीविका महिला ग्राम संगठन-दो की आजीविका पशु सखी अनीता देवी एकता आजीविका रिसोर्स सेंटर में अध्यक्ष हैं. अनीता देवी कहती हैं कि सखी मंडल की दीदियों को जेएसएलपीएस की ओर से कई तरह की सुविधा उपलब्ध करायी जा रही है. गौ पालन और बकरी पालन से ग्रामीण महिलाओं की आय बढ़ी है, वहीं बतख पालन से भी महिलाओं की आय बढ़ाने पर विचार किया जा रहा है, इसलिए जीआरसी के माध्यम से लाभुकों के बीच बतख के चूजे का वितरण किया गया. 170 रुपये में लाभुकों को 15 बतख के चूजे दिये गये. इसमें हेसल गांव के 12 महिला लाभुक, जरगा गांव की 25 और सिरका, महेशपुर व मसनिया गांव की 22 महिला लाभुकों के बीच बतख के चूजे का वितरण किया गया. बतख के चूजे मिलने से प्रसन्न लाभुक कहती हैं कि आजीविका का यह प्रयास सराहनीय है. इससे ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार मिलेगा. आजीविका पशु सखी अनीता देवी ने कहा कि बतख, मुर्गी और बकरियों की देखभाल कैसे की जाये, इसके लिए वो घर-घर जाकर टीकाकरण करती हैं. लोगों को बेहतर तरीके से पशुपालन करने के बारे में बताती हैं. इसलिए गांव के लोग अब उन्हें डॉक्टर दीदी के नाम से भी जानते हैं. जीआरसी को-ऑर्डिनेटर सत्येंद्र सिंह ने बताया कि वो जीआरसी में होनेवाली हर गतिविधि को देखते हैं. 2017-18 की योजनाओं को लेकर लाभुकों का चयन हुआ है. इसलिए उनके बीच बतख के चूजों का वितरण किया गया. इसमें झारखंड सरकार की ओर से 90 फीसदी अनुदान दिया जाता है. लाभुकों की ओर से 10 फीसदी राशि दी जाती है. बतख को पहले जीआरसी में 15 दिन देखभाल किया जाता है. फिर लाभुकों के बीच उनका वितरण किया जाता है. दुर्गा आजीविका महिला समूह, सिरका गांव की शांति देवी कहती हैं कि बतख के चूजें लेने के लिए आधार नंबर और मोबाइल नंबर दिया जाता है. उन्हें 15 बतख के चूजे मिले हैं. इससे स्वरोजगार बढ़ेगा.

आजीविका कृषि मित्र का मिला प्रशिक्षण

रंजू कुमारी बेसरा

प्रखंड : बसंतराय
जिला : गोड्डा

गोड्डा जिला अंतर्गत बसंतराय प्रखंड मुख्यालय के बीएमएमयू ऑफिस परिसर में आजीविका कृषि मित्र का एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन हुआ. प्रशिक्षण में आजीविका कृषि मित्र का कार्य कर रहीं सभी पंचायतों से चुनी गयी आजीविका कृषि मित्र शामिल हुईं. एफटीसी मीरू मुर्मू द्वारा प्रशिक्षण दिया गया. प्रशिक्षण कार्यक्रम में बताया गया कि ग्रामीण महिलाएं जमीन मापने के लिए गांव में चलने वाले शब्द कट्ठा और बीघा ही जानती थीं, पर प्रशिक्षण के बाद अब महिलाएं डिसमिल, एकड़, हेक्टेयर आदि के बारे में भी जान पायी हैं. प्रशिक्षण के दौरान ही महिलाओं को जमीन की प्रोफाइलिंग के बारे में बताया गया. उन्हें जमीन मापने के लिए इस्तेमाल किये जानेवाले मानकों की जानकारी दी गयी. फिर उन्हें बताया गया कि किसान का रजिस्ट्रेशन कैसे करना है. फसल का पीओपी कैसे करनी है. उन्हें बताया गया कि यहां से प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद जब महिलाएं अपने गांव जायेंगी, तो किस प्रकार से सखी मंडल की महिलाओं को कृषि के बारे में बतायेंगी. यह भी बतायेंगी कि खेती-किसानी से जुड़कर कैसे अच्छी कमाई की जा सकती है. सभी एकेएम से कहा गया कि गांव जाकर महिलाओं को बतायेंगी कि किस मौसम में कौन सी खेती की जाती है. खेत में फसल लगाने के लिए किस का चुनाव किस प्रकार से करना है, ताकि कम लागत में अधिक पैदावार मिल सके. प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि भूमि तीन प्रकार की होती है. टांड़, मध्य और दोन. अंत में प्रशिक्षण के दौरान फसल की लागत और लाभ के बारे में बताया गया. साथ ही पारंपरिक और आधुनिक खेती के बारे में बताया गया. यह भी बताया गया कि एप के माध्यम से कैसे किसानों का पंजीकरण मोबाइल से कर सकते हैं. जानकारी पाकर महिलाएं काफी खुश दिखीं.

एकेएम का प्रशिक्षण प्राप्त करतीं महिलाएं.

मेले से आजीविका बढ़ातीं जबनी देवी

सरिता देवी

प्रखंड : नवाडीह
जिला : बोकारो

बोकारो जिले के नवाडीह प्रखंड अंतर्गत भेंडरा गांव की जबनी देवी मेला में अपनी दुकान लगाकर अपनी आजीविका को आगे बढ़ा रही हैं. नवाडीह प्रखंड में प्रत्येक वर्ष मकर संक्रांति के अवसर पर 15 से 24 जनवरी तक मेला लगता है. मेले की परंपरा लगभग सौ वर्षों से चली आ रही है. मेले को मां जलेश्वरी मेला के नाम से जाना जाता है. मेले में मुख्य रूप से लोहे से बनी सामग्री की खरीद-बिक्री होती है. मेले में गांव के आस-पास के अलावा अन्य क्षेत्र से भी लोग आते हैं और अपनी दुकान लगाते हैं. 10 दिनों तक चलनेवाले इस मेले में बड़ी संख्या में लोग आते हैं. इससे उन दुकानदारों की अच्छी कमाई होती है. लोगों के मनोरंजन के लिए मेले में छोटे-बड़े झूले, ब्रेक डांस, मौत का कुआं, सर्कस आदि से भी ग्रामीणों का मनोरंजन किया जाता है. विभिन्न प्रकार के खान-पान भी मेले की शोभा बढ़ाते हैं. जबनी देवी भी मेले में अपनी दुकान लगाई थीं. उनके द्वारा बनाए हुए गरमा-गरम समौसे, पकौड़े, चाय, ब्रेड समेत विभिन्न प्रकार की खाद्य सामग्री की खूब बिक्री हुई. मेले में प्रतिदिन के हिसाब से जबनी देवी को लगभग 1000-1200 तक की कमाई हुई. जबनी दीदी बताती हैं कि वो समूह की मदद से ही दुकान खोल पायी हैं. जबनी श्री साईं आजीविका सखी मंडल से जुड़ीं हैं. मेला में होटल खोलने के लिए उन्होंने समूह से 5000 रुपये लोन लिया था. इस दुकान से अच्छा मुनाफा हुआ और वो काफी खुश हैं. अब लोन लेकर और बड़ा होटल खोलेंगी. जबनी ने कहा कि यह दुकान उनके लिए प्रेरणादायक है. इससे उनकी आजीविका बढ़ेगी. इसके लिए जबनी देवी ने जेएसएलपीएस को धन्यवाद देते हुए कहा कि इसके जरिये ही यह सब संभव हो पाया है.

नवाडीह प्रखंड स्थित अपने होटल में सामान बेचतीं जबनी देवी.

बैंक सखी सुनीता की है अपनी पहचान

बैंक में काम करतीं बैंक सखी सुनीता देवी.

सुषमा देवी

प्रखंड : कांके
जिला : रांची

रांची जिला अंतर्गत कांके प्रखंड के सुकुरहुट्टू गांव की सुनीता देवी की पहचान आज बैंक सखी के रूप में है. बैंक सखी बनकर उनके घर में खुशहाली आयी है, वहीं गांव में भी मान- सम्मान बढ़ा है. सुनीता देवी एक सामान्य परिवार की महिला हैं. परिवार में पति और दो बेटियां हैं. समूह से जुड़ने से पहले घर की आर्थिक बेहद खराब थी. पति बेरोजगार थे. इस कारण घर चलाना मुश्किल था. इस बीच उन्हें सखी मंडल की जानकारी मिली. समूह से जुड़ने पर होनेवाले फायदों को जानकर सुनीता देवी वर्ष 2016 में जीवन ज्योति महिला समूह से जुड़ गयीं. समूह से जुड़ने के बाद सुनीता पुस्तक संचालक का कार्य करने लगीं. इसके बाद मालश्रृंग कलस्टर में बैंक सखी का चुनाव हुआ. इसमें उन्हें बैंक सखी के रूप में चयन किया गया. सुनीता इलाहाबाद बैंक की सुकरहुट्टू शाखा में बैंक सखी का काम करने लगीं. बैंक सखी का कार्य करते हुए सुनीता के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया. सुनीता बताती हैं कि बैंक सखी बनने से पहले उन्हें गांव में कोई नहीं जानता था. अब उन्हें अपने गांव के साथ-साथ अगल-बगल गांव के लोग भी जानने लगे हैं. बैंक सखी बनने के बाद परिवार के लोग भी अब पहले की अपेक्षा ज्यादा मान-सम्मान देते हैं. उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार आया है. दोनों बच्चियां अच्छे स्कूल में पढ़ाई कर रही हैं. सुनीता हर रोज समय से बैंक पहुंचती हैं. उन्हें प्रतिमाह 3000 रुपये मिलते हैं. सुनीता बताती हैं कि बैंक सखी के तौर पर ग्रामीण महिलाओं को बचत से संबंधित पूरी जानकारी विस्तार से देती हैं. साथ ही बचत से भविष्य में होनेवाले फायदे के बारे में भी बताती हैं. पहले गांव की महिलाएं बैंक जाने से हिचकिचाती थीं, लेकिन ग्रामीणों की इस हिचकिचाहट को वह दूर कर रही हैं. ग्रामीणों को वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन के बार में जानकारी देती हैं. उनका बैंक खाता खोलती हैं. साथ ही कई योजनाएं जैसे प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, अटल पेंशन योजना और व्यक्तिगत खाता के बारे में जानकारी देती हैं. सुनीता के कामकाज से बैंक के अधिकारी और कर्मचारी भी काफी खुश हैं.

संवाददाता सखियों को मिला प्रशिक्षण

जेएसएलपीएस द्वारा संवाददाता सखियों के लिए रांची के तुपुदाना स्थित सप्तर्षि भवन में दो दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया. प्रशिक्षण शिविर में सभी जिलों की संवाददाता सखियों ने हिस्सा लिया. कुमार विकास, छोटू सिंह, ज्योति रानी, अंकिता तिवारी और अंकिता टोप्पो ने सभी को प्रशिक्षण दिया. सखी मंडल से जुड़ीं महिलाओं को बताया गया कि किस प्रकार से कहानी लिखी जाती है. सखी मंडल के जुड़कर महिलाओं के जीवन में किस तरह का बदलाव आया है. पहले की जिंदगी क्या थी और समूह से जुड़ने के बाद जिंदगी में क्या बदलाव आया है. इसके बारे में कैसे लिखना है. साथ ही यह भी बताया गया कि किस प्रकार से महिला आत्मनिर्भर बनते हुए परिवार और बच्चों का पालन पोषण कर रही हैं. अपना रोजगार करने के लिए महिला ने समूह से कितना लोन लिया और किस प्रकार से उनकी कमाई हो रही है. लोन कितना चुका रही हैं. इन सभी गतिविधियों को किस तरह से लिखा जा सकता है. साथ ही यह भी बताया गया कि महिलाएं कौन सा स्वरोजगार से जुड़ी हैं, इसके बारे में भी अपनी रिपोर्ट में जानकारी जरूर दें. प्रशिक्षण प्राप्त कर सखी मंडल की दीदियां काफी खुश हुईं.

प्रमिला देवी

प्रखंड : डोमचांच
जिला : कोडरमा

साप्ताहिक बाजार का उद्घाटन

गिरिडीह जिले के डुमरी प्रखंड अंतर्गत ताम्बागुडियों गांव में एसवीइपी के तहत नये साप्ताहिक हाट बाजार का उद्घाटन किया गया. उद्घाटन समारोह में ताम्बागुडियों पंचायत के मुखिया, वार्ड सदस्य समेत सखी मंडल की महिलाएं शामिल हुईं. एसवीइपी के तहत कार्य करनेवाली प्रिया ने बताया कि डुमरी प्रखंड में कुल 37 पंचायत हैं. उस 37 पंचायतों की महिलाओं को सखी मंडल से जोड़ कर योजना के अंतर्गत गांव की हर महिला को स्वरोजगार से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाना है. साथ ही व्यापार में रूचि रखनेवाली महिला और पुरुषों को ट्रेनिंग दें. सीएलएफ द्वारा लोन दिलाकर बिजनेस के लिए मदद किया जाता है. महिलाओं को प्रतिदिन के हिसाब-किताब के लिए डायरी मेंटन करना पड़ता है, ताकि डायरी के माध्यम से लाभ-हानि का पता चल सके. ताम्बागुडियों पंचायत के मुखिया ने बाजार का उद्घाटन होने पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि इससे गांव की महिलाओं की आय बढ़ेगी. पंचम देवी ने बताया कि पहले उनके गांव में बाजार नहीं था. बाजार जाने के लिए 18 किलोमीटर दूर सफर तय करनी पड़ती थी. अब बाजार लगने से समय और पैसे दोनों की बचत होगी.

मुनिया देवी

प्रखंड : डुमरी
जिला : गिरिडीह

आंगनबाड़ी केंद्र में पोषाहार बांटेंगी

लातेहार जिला अंतर्गत बरवाडीह प्रखंड कार्यालय में एक बैठक का आयोजन हुआ. बैठक में सखी मंडल की दीदियां और आंगनबाड़ी सहिया काफी संख्या में शामिल हुईं. बैठक के दौरान बताया गया कि आंगनबाड़ी केंद्रों में पोषाहार की आपूर्ति किसी निजी कंपनी द्वारा नहीं करायी जायेगी, बल्कि उसी क्षेत्र की सखी मंडल की दीदियां पोषाहार का सप्लाई करेंगी. बताया गया कि दूसरी जगह से मंगाये जानेवाले पोषाहार पर रोक लगा दी गयी है. बैठक में यह भी बताया गया कि पोषाहार के लिए जो फंड आता है, वो फंड सखी मंडल की महिलाओं को दिया जायेगा, ताकि महिलाओं को रोजगार भी मिल सके. सखी मंडल की महिलाओं को बताया गया कि गर्भवती महिलाएं समेत छह वर्ष से छह साल तक के कुपोषित बच्चों को पोषाहार दिया जाता है. महिला ग्राम संगठनों के जरिये यह काम मिलेगा. जो महिलाएं ग्राम संगठन से जुड़ी हैं उन्हें पोषाहार वितरण योजना से जोड़ा जायेगा. एक ग्राम संगठन द्वारा छह से आठ आंगनबाड़ी केंद्रों में पोषाहार की आपूर्ति की जायेगी. जानकारी पाकर महिलाएं काफी खुश दिखीं.

शबनम खातून

प्रखंड : बरवाडीह
जिला : लातेहार

फाइल बैग बनाने का मिला प्रशिक्षण

जामताड़ा जिले के नाला प्रखंड अंतर्गत टेसुजुडिया पंचायत के खुदियाम गांव में स्वरोजगार के लिए 10 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया. प्रशिक्षण के आखिरी दिन सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया. प्रशिक्षण के दौरान खुदियाम सखी मंडल की महिलाओं को पेपर लिफाफा और फाइल बैग बनाने का प्रशिक्षण मिला. ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (आरसेटी) के सौजन्य से इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया था. इस दौरान आरसेटी के निदेशक श्रीकांत शर्मा ने बताया कि किस प्रकार से स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री से सामान बनाया जा सकता है. शुरुआती दौर में समूह की सदस्य भी इस प्रकार का सामान बनायें. इससे सभी की आय में बढ़ोतरी होगी. इस दौरान पेपर लिफाफा और फाइल बैग को बनाने और बेचने के बारे में विस्तार से बताया गया. अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए दीदियां बैंक से लोन ले सकती हैं. बीपीएम नीलकांत कच्छप ने बताया कि दीदियों को स्वरोजगार देने व उनके उत्पाद को बाजार देने के लिए जेएसएलपीएस मेले के माध्यम से एक मंच प्रदान करता है.

सुपर्णा पाल

प्रखंड : नाला
जिला : जामताड़ा